तद्भव

तद्भव

आधुनिक रचनाशीलता पर केंद्रित विशिष्ट संचयन

वर्ष-12, अंक-1
पूर्णांक-48
जनवरी-2024

संपादक
अखिलेश

लेजरटाइप सेटिंग
मोहिनी शर्मा
दिल्ली

मुद्रण
ग्रैंड प्रिंटिंग प्रेस
गोमती नगर, लखनऊ

मूल्य
एक प्रति : दो सौ रुपये
संस्थाओं के लिए : तीन सौ पचास रुपये
वार्षिक सदस्यता : चार सौ रुपये (डाक खर्च सहित)
संस्थाओं के लिए : सात सौ रुपये (डाक खर्च सहित)
विदेश के लिए : सत्तर डालर
आजीवन सदस्यता : दस हजार रुपये

सम्पर्क
18/201, इंदिरा नगर,
लखनऊ - 226016
उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 6388234196
ई-मेल : akhilesh_tadbhav@yahoo.com

समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक अखिलेश कुमार द्वारा 18/201, इंदिरा नगर, लखनऊ, उ.प्र. से प्रकाशित और ग्रैंड प्रिंटिंग प्रेस, 337 विजयीपुर, विशेष खंड, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित

अनुक्रम

जीवन
अस निबहूर देसू-IV **विश्वनाथ त्रिपाठी** 1

शताब्दी
प्रश्नों की नोक पर सधी प्रतिभा **राजेंद्र कुमार** 24

लेख
काजी 'फादर' कौन कतेब बखानै : वर्चस्व की व्यवस्था, पाठ और उपनिवेशन **तृप्ति श्रीवास्तव** 47 / हिंदी और आर्मेनियाई नवजागरण : एक अवलोकन **डॉ. माने मकर्तच्यान** 64

कहानियां
तीन कथाएं **जितेंद्र भाटिया** 78 / फेयरवेल **अरविंद कुमार सिंह** 91

कविताएं
कविताएं **तसलीमा नसरीन** 110 / कविताएं **जसिंता केरकेट्टा** 119 / गाजा में युद्ध **अशोक कुमार पांडेय** 125 / 'अजाने मेलों में' से गुहारते हुए **यतीश कुमार** 128 / कविताएं **आलोक पराड़कर** 137 कविताएं **विजय राही** 142 / कविताएं **अमर मीना** 148 / लोकगीत में रोना **प्रज्वल चतुर्वेदी** 153

वृत्तांत
चिकुनगुनिया स्मृति **कृष्ण कुमार** 157

स्मरणालोचन
हिंदी साहित्य में प्रयागवाद-III : मध्याह्न और संध्यावसान : 'परिमल', प्रगति प्रयोग, और नई कविता **हरीश त्रिवेदी** 169

लंबी कहानी
अलबेला रघुबर **कविता** 197

समीक्षाएं
अस्मितामूलक कविता और नए प्रस्थान बिंदु की चुनौती **प्रियदर्शन** 227 / धरती का गुरुत्वाकर्षण और कवि का शहर **शशिभूषण मिश्र** 237 / ग्रामीण और कृषक जीवन का महाआख्यान **रविभूषण** 242 / पोस्ट ट्रूथ, फेक न्यूज, नैरेटिव एवं डीप स्टेट की दुनिया **राजीव कुमार** 248 / तिनके की ओट में समाहित मानवीयता का विराट परिप्रेक्ष्य **निशा नाग** 254/ संपूर्ण रचनाशीलता को थाहने की कोशिश **तारानंद वियोगी** 260 / संस्मरणों से झांकती पुलिस व्यवस्था **मनोज कुमार पांडेय** 265

संपादकीय

जनवरी *के महीने से वर्ष का प्रारंभ होता है लेकिन यह अनेक अन्य वजहों से भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। धर्म, कृषि, ऋतु से जुड़े कई अवसर इस माह में जनमानस को अपने से जोड़ते हैं। इन सबके साथ साथ जनवरी कुछ इतर कारणों से देशवासियों के लिए प्रसन्नता और दु:ख, दोनों का समय होता है। प्रसन्नता और उत्साह की वजह यह है कि ब्रिटिश साम्राज्य से आजादी पाने के बाद सन् 1950 में इसी माह की 26 तारीख को हमारे देश में अपना संविधान लागू किया गया था और भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया गया था। दूसरी घटना, सभी जानते ही हैं, शोक और क्षोभ की है कि सन् 1948 में 30 जनवरी को धर्मांध नाथूराम गोडसे ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर तीन गोलियां चला कर उनकी हत्या कर दी थी। व्यंजना में कहना हो तो, घृणा, धार्मिक उग्रवाद और हंता विचारधारा, इन तीन विषाक्त हथियारों ने गांधी जी का कत्ल किया था।*

उपरोक्त दोनों प्रसंगों को आगे ले जाते हुए कहना है कि गणतंत्र दिवस का उत्साह इस बात की चेतना भी जगाता रहा है कि हमारा संविधान शासन, सत्ता, नेता, मठाधीश, रिश्तों, वैयक्तिक आकांक्षाओं, धार्मिक अथवा किसी प्रकार की निष्ठाओं से ज्यादा महत्वपूर्ण, समादृत और मान्य है। इसको क्षतिग्रस्त करने वाली कोई भी गतिविधि लोकतंत्र विरोधी और अपराध है। इसी प्रकार गांधी जी की हत्या का स्मरण शोकाकुल करने के साथ हमें सांप्रदायिक, फासिस्ट, घृणा की उपासक शक्तियों के इरादों के प्रति न केवल सचेत रहने बल्कि उनका विरोध करने का सबक सौंपता है। इस तरह जोश और होश, शोक और प्रतिरोध जैसे फर्क फर्क रंगों का एक महीना बन जाता है जनवरी। यूं जनवरी के अन्य भी अनेक रंग हैं पर उनकी चर्चा करने का यहां अवसर नहीं है। फिलहाल इतना कहना जरूरी लग रहा है कि हमारे देश में इस बार 2024 का जनवरी माह हर बार के जनवरी सरीखा नहीं लग रहा है; ऐसा महसूस हो रहा है जैसे सब उल्टापुल्टा हो गया। जैसे पैरों पर चलते चलते यथार्थ सिर के बल चलने लगा है। संविधान और गणतंत्र का उत्सव मनाने के बजाय उस पर संकट के बादल गहराते दिख रहे हैं। आशंका होने लगी है, आजाद भारत की यह सबसे महान थाती, इसके नियम, इसके संस्थान, इसकी कार्यपद्धति, इसकी संरचना और इसका स्वरूप सभी निशाने पर हैं। हम राजनीतिक घटनाक्रमों जैसे विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारियां, उनकी पार्टियों में तोड़फोड़, मीडिया पर एकछत्र नियंत्रण आदि को फिलहाल अलगा दें तो भी एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की संकल्पना को किनारे करते हुए राज्य और सरकारें जिस